विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ज्ञानोदय

0120-4545608

WEBSITE: SSMNOIDA.IN

GMAIL: SSM.NOIDA@GMAIL.COM

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

मासिक ई–पत्रिका, अक्टूबर – 2025

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार
ब0अनु सिंह

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- गुरु नानक जयंती
- महारानी लक्ष्मीबाई जयंती
- भारतीय संविधान दिवस
- सर जगदीश चंद्र बसु जयंती
- गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस
- कार्तिक पूर्णिमा
- महर्षि वाल्मीकि जयंती
- भैया-बहिनों का दीपावली उपहार
- धन्वंतरि जयंती
- दीपावली प्रतियोगिता
- दीपोत्सव
- श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती
- छठ महापर्व
- विभागीय खेलकूद प्रतियोगिता
- क्षेत्रीय विज्ञान मेला
- सरदार बल्लभ भाई पटेल
- जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

बच्चों के शारीरिक विकास में खेल कूद का महत्व

बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। खेल न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि वे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास की नींव भी मजबूत करते हैं। आज के डिजिटल युग में, जहाँ बच्चे अधिक समय मोबाइल और टीवी में बिताने लगे हैं, वहाँ खेल का महत्व और भी बढ़ गया है। खेल बच्चों को सक्रिय रखते हैं और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

खेल बच्चों के शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। नियमित खेलकूद से बच्चों की मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं और उनके शरीर का संतुलित विकास होता है। दौड़ना, कूदना, तैरना, साइकिल चलाना आदि गतिविधियाँ उनके दिल और फेफड़ों की क्षमता को बढ़ाती हैं। इससे शरीर में रक्त संचार बेहतर होता है और बच्चे अधिक ऊर्जावान तथा फुर्तीले बनते हैं। खेल हड्डियों को भी मजबूत बनाते हैं और मोटापे जैसी स्वास्थ्य समस्याओं से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, खेल बच्चों में संतुलन, लचीलेपन और समन्वय कौशल का विकास करते हैं, जो उनके दैनिक जीवन में भी उपयोगी होते हैं।

खेल बच्चों में अच्छी आदतों और स्वस्थ दिनचर्या विकसित करने में सहायक होते हैं। नियमित खेलकूद उन्हें समय प्रबंधन, स्वच्छता, आत्मनियंत्रण और स्वस्थ खान-पान की ओर प्रेरित करता है।

इस प्रकार, बच्चों के शारीरिक विकास में खेल का महत्व अत्यधिक है। इसलिए प्रत्येक अभिभावक और विद्यालय को चाहिए कि वे बच्चों को प्रतिदिन खेलकूद के लिए प्रोत्साहित करें, ताकि वे स्वस्थ, खुशहाल और संतुलित जीवन जी सकें।

लेखराज सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा के विकास पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग (International Commission on the Development of Education) के प्रतिवेदन में कहा गया है, "शिक्षा प्रणाली किसी भी देश की राष्ट्रीय चेतना, संस्कृति तथा परम्पराओं की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। चूँकि कोई भी राष्ट्र किसी भी अन्य राष्ट्र के समान नहीं है. शैक्षिक समस्याओं की उतनी ही परिभाषाएँ हो सकती हैं. जितने कि विश्व में देश हैं।"

2020 न केवल जीवन प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिवर्तन के उद्देश्य से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था की बात करती है, बल्कि विचार पद्धति को समुचित दिशा देने तथा चरित्र निर्माण करने में सक्षम परिपूर्ण ज्ञान आधार के निर्माण का लक्ष्य भी रखती है। इसके दृष्टिपथ में ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो भारतीय जीवनमूल्यों तथा भारत की दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित हो, साथ ही साथ भारत को विश्व की अपराजेय ज्ञान महाशक्ति बनाने के लिए आवश्यक आमूलचूल परिवर्तन को उचित दिशा दे सके।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा

गुरु नानक जयंती

भारत उस आध्यात्मिक विभूति की जयंती को भक्ति और उत्सवो के ऐसे उत्सव के साथ मनाता है । जो हम सभी को आश्चर्य चकित कर देगा । वर्ष 1469 में जन्मे गुरु नानक देव सिर्फ एक ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं थे - वह आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतीक थे , जिन्होंने सिख धर्म के मार्ग को रोशन किया । इनका जन्म 15 अप्रैल 1469 को राय भोई की तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था, जो अब ननकाना साहिब पाकिस्तान के नाम से जाना जाता है । वह सिख धर्म के संस्थापक और पहले गुरु थे । गुरु नानक देव के संदेश हमें सिखाते हैं कि सत्य न्याय और करुणा पर आधारित जीवन ही सफलता का सच्चा मापदंड है । उनकी शिक्षाएं एक ईश्वर और मानव समानता पर .जोर देती है । वह हमें सत्य निष्ठा से जीने और एक संसाधन साझा करने को प्रेरित करते हैं। हर वर्ष गुरु नानक जयंती के पावन अवसर पर उन्हें नमन किया जाता है । इस दिन को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है, इस दिन सिख गुरुवारों में नगर- कीर्तन जुलूसों में भाग लेते हैं और गुरुद्वारों में विशेष लंगर का आयोजन किया जाता है । हम सभी उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं का जीवन में धारण करने का प्रण करते हैं ।

शीला सिंह रघुवंशी(आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

महारानी लक्ष्मीबाई जयंती

भारत के इतिहास में अनेक वीरांगनाओं ने अपने साहस, देशभक्ति और बलिदान से अमर कीर्ति अर्जित की है। इनमें से एक नाम है रानी लक्ष्मीबाई, जिन्हें पूरा देश "झाँसी की रानी" के नाम से जानता है। उनका जन्म 19 नवम्बर 1828 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और माता का नाम भागीरथी बाई था। बचपन में उनका नाम मणिकर्णिका (मनु) था। मनु बचपन से ही अत्यंत बुद्धिमान, साहसी और स्वाभिमानी थीं। उन्होंने बचपन में ही घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्धकला सीखी। बचपन से ही वे निडर और आत्मविश्वासी स्वभाव की थीं। मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हुआ और विवाह के बाद वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाईं। महाराजा गंगाधर राव के निधन के बाद, अंग्रेज़ों ने "डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स" नीति के तहत झाँसी को अपने अधीन करने की कोशिश की। लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने दृढ़ता से घोषणा की –

"मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।"

यह वाक्य आज भी हर भारतीय के दिल में जोश और देशभक्ति का संचार करता है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता और रणनीति से अंग्रेज़ों को कड़ी चुनौती दी। उन्होंने महिला सेना का गठन किया और अपने छोटे से पुत्र दमोदर राव को पीठ पर बाँधकर युद्धभूमि में वीरता से लड़ीं। 18 जून 1858 को ग्वालियर के समीप कोटा की सराय में युद्ध करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुईं। उन्होंने मरते दम तक अपने राष्ट्र, सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा की। रानी लक्ष्मीबाई भारतीय नारी शक्ति, साहस और देशभक्ति का प्रतीक हैं। उनकी जयंती के अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम भी अपने देश के प्रति निष्ठावान रहेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

संक्षेप में प्रमुख तथ्य:

जन्म: 19 नवम्बर 1828, वाराणसी

पति: महाराजा गंगाधर राव

पुत्र: दमोदर राव

मृत्यु: 18 जून 1858, ग्वालियर

प्रसिद्ध कथन: "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।"

तनुजा जैन(आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

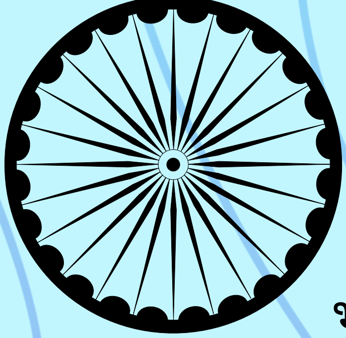

भारतीय संविधान दिवस

भारतीय संविधान दिवस हर साल 26 नवंबर को मनाया जाता है। यह दिन 1949 में इसी तारीख को भारतीय संविधान सभा द्वारा संविधान को अपनाने की याद में मनाया गया, जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था।

भारतीय संविधान के विशिष्ट पहलू :-

1. * सार्वभौमिकता*: संविधान भारत को एक सार्वभौमिक देश घोषित करता है, जिसका अर्थ है कि यह किसी भी विदेशी शक्ति के अधीन नहीं है।

2. लोकतंत्र: संविधान भारत को एक लोकतांत्रिक देश बनाता है, जहां सत्ता जनता के पास होती है और वे अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करते हैं।

3. धर्मनिरपेक्षता: संविधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष देश घोषित करता है, जिसका अर्थ है कि राज्य किसी भी धर्म को विशेष दर्जा नहीं देता है और सभी धर्मों के लोगों को समान अधिकार प्रदान करता है।

4. सामाजिक और आर्थिक न्याय: संविधान सामाजिक और आर्थिक न्याय के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर करना है।

5. मूलभूत अधिकार: संविधान नागरिकों को मूलभूत अधिकार प्रदान करता है, जैसे कि समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, और जीवन का अधिकार।

6. राजनीतिक संरचना: संविधान भारत की राजनीतिक संरचना को परिभाषित करता है, जिसमें संसदीय प्रणाली, संघीय प्रणाली, और स्वतंत्र न्यायपालिका शामिल हैं।

7. संशोधन प्रक्रिया: संविधान में संशोधन करने की प्रक्रिया को परिभाषित किया गया है, जो इसे समय के साथ बदलते हुए परिस्थितियों के अनुसार अद्यतन करने की अनुमति देती है।

आरती राठी(आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

सर जगदीश चंद्र बसु जयंती

जगदीश चंद्र बोस, एक ऐसा नाम जो भारतीय विज्ञान के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है। उनका जन्म 30 नवंबर 1858 को बंगाल में हुआ था।

बोस ने अपनी शिक्षा कलकत्ता और लंदन में पूरी की। उन्होंने वनस्पति विज्ञान और भौतिकी में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
बोस के अनुसंधान ने वनस्पति विज्ञान और भौतिकी के बीच एक नए द्वार को खोला। उन्होंने क्रेसकोग्राफ का आविष्कार किया जो पौधों की वृद्धि को मापने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बोस के कार्यों को न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में उनकी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उनका निधन 23 नवम्बर 1937 को हुआ।

जगदीश चंद्र बोस से हमें विज्ञान के प्रति समर्पण और जुनून की प्रेरणा मिलती है। उनके कार्य और विरासत आज भी हमें प्रेरित करते हैं और हमें विज्ञान के क्षेत्र में नए कीर्तिमान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

निधि पाण्डेय(आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस

एक महान योद्धा, आध्यात्मिक व्यक्तित्व और मातृभूमि के प्रेमी नौवें सिक्ख गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी के सर्वोच्च बलिदान की मानवता सदैव ऋणी रहेगी। उन्होंने धर्म, मातृभूमि और जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। इसीलिए उन्हें "हिंद की चादर" के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया। श्री गुरु तेग बहादुर जी के 400 वें प्रकाश पर्व को मनाते हुए, हमें उनके महान आदर्शों के प्रति समर्पित करने की जरूरत है जो हमें धार्मिक स्वतंत्रता और मानव कल्याण के महत्व के बारे में सिखाते हैं।

अद्वितीय तरीके से श्री गुरु तेग बहादुर जी ने हमें निडर होकर एक स्वतंत्र जीवन जीने की शिक्षा दी। मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा गुरू जी और उनके परिवार को भारी यातनाएं देने पर भी उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया, बल्कि उन्हें एक दिव्य शांति के साथ सहन किया। त्याग मल से तेग बहादुर में उनका परिवर्तन मानव इतिहास में परम धार्मिक दृढ़ता, नैतिकता और बहादुरी की अद्भुत कहानी है। गुरू जी ने अपने जीवन का बलिदान दिया लेकिन सत्य और धार्मिकता के मार्ग को नहीं छोड़ा। उनकी दिव्य शक्ति ऐसी थी कि जब उनके शिष्यों को उनके सामने क्रूरता से मारा जा रहा था तो वे गहरे ध्यान में थे। श्री गुरु तेग बहादुर जी ने कहा था कि धर्म एक कर्तव्य है, और एक आदर्श जीवन जीने का तरीका है। गुरू जी की शहादत मनुष्य को कर्तव्य परायणता, स्वतंत्रता व देश के प्रति प्रतिबद्धता का पाठ पढ़ाती है।

प्रारंभिक जीवन: वर्ष 1621 में अमृतसर में जन्मे गुरु तेग बहादुर को उनके तपस्वी स्वभाव के कारण शुरू में त्यागमल के नाम से जाना जाता था। धार्मिक दर्शन एवं युद्ध कौशल में प्रशिक्षित होने के साथ युद्ध में वीरता के लिये उन्हें "तेग बहादुर" की उपाधि प्रदान की गई।

गुरु के रूप में योगदान: वर्ष 1664 में गुरु हरकिशन के बाद 9 वें सिख गुरु बने। इन्होंने वर्ष 1665 में आनंदपुर साहिब की स्थापना की तथा समानता, न्याय और भक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हुए गुरु ग्रंथ साहिब में 700 से अधिक भजनों का योगदान दिया।

धार्मिक स्वतंत्रता के समर्थक: इन्होंने औरंगजेब के शासनकाल के दौरान जबरन धर्मांतरण का विरोध किया तथा अपने अनुयायियों के बीच निर्भयता (निरभौ) और सद्भाव (निरवैर) को प्रोत्साहित किया।

शहीदी दिवस: 24 नवंबर को गुरु तेग बहादुर (जिनकी कश्मीरी पंडितों की रक्षा करने एवं जबरन इस्लाम में धर्मांतरण का विरोध करने के लिये औरंगजेब द्वारा वर्ष 1675 में हत्या की गई थी) के सम्मान में शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दिल्ली के चांदनी चौक स्थित गुरुद्वारा शीशगंज साहिब, उनके शहीद होने का स्थल है।

प्राची मिश्रा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

कार्तिक पूर्णिमा

कार्तिक पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण हिंदू पर्व है। यह प्रतिवर्ष कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है।इसे देव दीपावली, त्रिपुरारी पूर्णिमा और गंगा- स्नान पर्व के नाम से भी जाना जाता है। यह दिन भगवान विष्णु और भगवान शिव की पूजा के लिए विशेष माना जाता है। इस दिन दान- पुण्य के कार्यों का विशेष महत्व माना गया है।इस पर्व में गंगा- घाटों पर दीप जलाए जाते हैं और विशेष पूजा अर्चना की जाती है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का वध किया था।तब सभी देवताओं ने भगवान शिव की प्रिय नगरी काशी में अनेक दीप जलाकर दीप-उत्सव मनाया था।यह पर्वबुराई पर अच्छाई की जीत का भी प्रतीक है।इस दिन भगवान शिव व माता पार्वती के पुत्र कार्तिकेय का जन्म भी हुआ था। एक अन्य कथा के अनुसार कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार धारण किया था।कहते हैं इस अवतार में भगवान विष्णु ने धरती को जल- प्रलय से बचाया था और सभी प्राणियों को सुरक्षा प्रदान की थी।

कार्तिक पूर्णिमा का दिन पापों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है।इस दिन गंगा- स्नान और दान करने से व्यक्ति को अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और जीवन में सुख- समृद्धि आती है ।इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पवित्र नदी, तालाब या घर पर गंगा-जल मिले जल से स्नान करना शुभ माना जाता है ।स्नान के बाद भगवान विष्णु ,भगवान शिव वमांलक्ष्मी की पूजा की जाती है। शाम के समय घर के आंगन, मंदिर व नदी किनारे दीपदान की प्रथा है।दीपदान से वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। अत::यहपर्व हमारी महान सांस्कृतिक धरोहर तथा आध्यात्मिक चेतना को दर्शाता है।

दीपिका डबास (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर , नोएडा

महर्षि वाल्मीकि जयंती

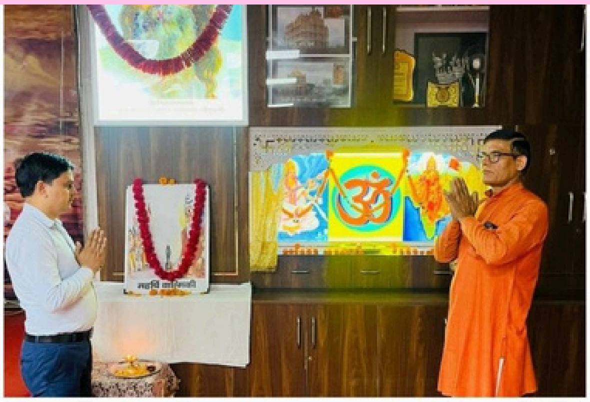

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में दिनांक- 06/10/25 को महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई गई। इस अवसर पर वंदना सत्र में English communication में प्रशिक्षण प्राप्त अतिथियों का आगमन हुआ तथा भैया-बहिनों को बताया गया कि वाल्मीकि जी को 'आदिकवि' कहा जाता है, यानी सबसे पहले काव्य लिखने वाले जिन्होंने रामायण जैसे अद्भुत महाकाव्य की रचना की। भैया- बहिनों इससे यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों का पालन करना ज़रूरी है। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने आए अतिथि गणों का आभार व्यक्त किया।

भैया - बहनों का दीपावली उपहार

दिनांक- 09/10/25 दिन- बृहस्पतिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में wiesner worldwide kreation Pvt.Ltd. द्वारा कक्षा अरुण, उदय, प्रभात तथा प्रथम से पंचम के भैया-बहिनों व समस्त स्टाफ को गिफ्ट (cushion) दिए गए। इस अवसर पर कंपनी की डायरेक्टर श्रीमती भावना झा जी एवं कंपनी की सीनियर डिजाइनर श्रीमती महिमा मेहता जी द्वारा सभी को गिफ्ट दिए गए एवं भैया-बहिनों को दीपावली किस प्रकार माननी है उसकी प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्रीमती मधु मेहता जी द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

धन्वंतरि जयंती

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में धनतेरस एवं भगवान धन्वंतरि जयंती का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह दिन दीपावली उत्सव की शुरुआत के रूप में भी जाना जाता है और साथ ही यह स्वास्थ्य एवं समृद्धि का प्रतीक है।

कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय के प्रांगण में मां सरस्वती एवं भगवान धन्वंतरि के चित्र पर दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्पण से हुई। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने अपने प्रेरणादायक भाषण में बताया कि धनतेरस केवल धन प्राप्ति का पर्व नहीं, बल्कि “धन” के रूप में स्वास्थ्य और सद्गुणों के महत्व को समझाने वाला दिन है।

दीपावली प्रतियोगिता

हमारे विद्यालय में दीप सज्जा प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य भैया-बहनों में सृजनात्मकता, कलात्मक अभिव्यक्ति तथा भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम को प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता में विभिन्न कक्षाओं के भैया-बहनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। रंग-बिरंगे दीयों, आकर्षक रंगोली डिज़ाइनों तथा दीप सजावट की विविध कलात्मक विधियों ने पूरे परिसर को प्रकाशमय बना दिया। आचार्यों द्वारा मूल्यांकन के उपरांत श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

दीपोत्सव

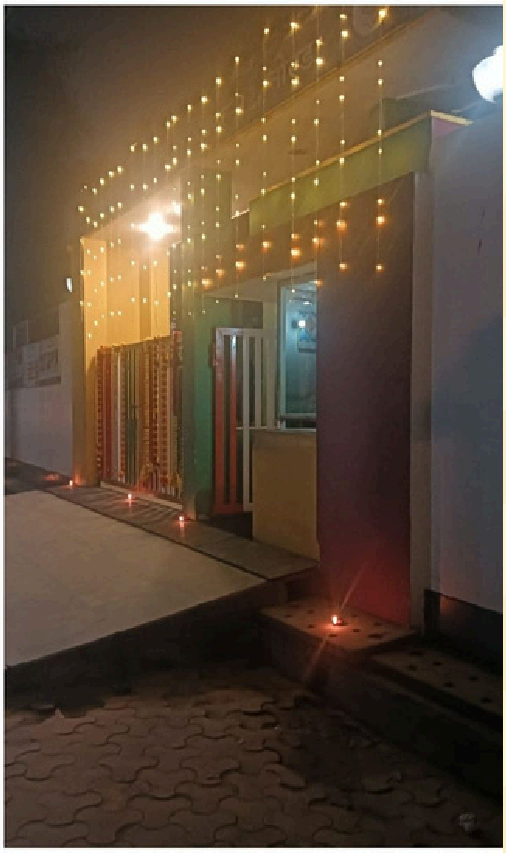

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में प्रवेश द्वार ,नवग्रह वाटिका, रिसेप्शन पर दीपोत्सव। भैया/बहिनों ने रंगोली, तोरण, दीपक व रंग-बिरंगी सजावट से विद्यालय को सुंदर सजाया।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती

दिनांक- 25/10/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में हमने ऐसे महान व्यक्ति की जयंती मनाई जिन्होंने अपने जीवन को देश, समाज और सत्य के लिए समर्पित कर दिया — श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी। वे केवल एक पत्रकार नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे सच्चे सिपाही थे जिन्होंने कलम को हथियार बनाकर अन्याय, अत्याचार और असमानता के खिलाफ आवाज उठाई।

विद्यालय के आचार्य श्री राजेंद्र जी ने भैया-बहिनों को गणेश शंकर विद्यार्थी जी के जीवन का परिचय देते हुए बताया कि हमारे महान स्वतंत्रता सेनानी ने कहा कि सत्य की राह कठिन हो सकती है, लेकिन वही सच्ची सफलता की राह है।

गणेश शंकर विद्यार्थी जी का जीवन हमें याद दिलाता है कि एक सच्चा विद्यार्थी वही है जो समाज के लिए सोचता है और देश के लिए कार्य करता है। भैया-बहिनों हमें भी अपने विद्यार्थी जीवन के कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

छठ महापर्व

दिनांक- 25/10/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा विद्यालय के आचार्य श्री दीपक जी ने भारत के एक अत्यंत पवित्र और लोकआस्था से जुड़े पर्व — छठ महापर्व — की चर्चा की। यह चार दिन का पर्व केवल पूजा या व्रत का नाम नहीं है, बल्कि श्रद्धा, संयम, मेहनत और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का अद्भुत प्रतीक है। उन्होंने बताया कि छठ पर्व मुख्य रूप से सूर्य देव और छठी मइया की उपासना का पर्व है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि प्रकृति और मनुष्य का गहरा संबंध है। सूर्य देव हमें ऊर्जा, जीवन और प्रकाश देते हैं — और यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हमें उस ऊर्जा का सम्मान करना चाहिए।

विभागीय खेलकूद प्रतियोगिता

विभागीय खेलकूद प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा का रहा दबदबा।

विद्या भारती के अंतर्गत शिशु शिक्षा समिति द्वारा संचालित गाजियाबाद विभाग के सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालयों की एक दिवसीय विभागीय प्रतियोगिता लाल बहादुर शास्त्री सरस्वती शिशु मंदिर टंकी रोड मुरादनगर के सौजन्य से लीलावती रामगोपाल सरस्वती विद्या मंदिर गंगा नहर मुरादनगर में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में गाजियाबाद विभाग के अंतर्गत गाजियाबाद, नोएडा एवं हापुड़ जिले के 25 विद्यालयों के 700 भैया बहनों ने विभिन्न प्रतियोगिताओ में भाग लिया। विभागीय प्रतियोगिता में मुजफ्फरनगर के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री कुश पुरी जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी प्रतिभागिता करने वाले भैया बहनों से खेलों के क्षेत्र में आगे बढ़ने की अपील करते हुए श्री कुशपुरी जी ने कहा कि खेलों के माध्यम से खिलाड़ी इस क्षेत्र में अपना करियर बनाकर आगे बढ़ रहे हैं। विभागीय प्रतियोगिताओं में सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के 120 भैया बहनों ने एथलेटिक्स , शतरंज, बैडमिंटन, कुश्ती, खो खो, कबड्डी आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। विद्यालय के भैया बहनों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 75 गोल्ड 21 सिल्वर व 4 कांस्य पदक प्राप्त किये। आयोजित प्रतियोगिता के अंतर्गत सबसे हर्ष का विषय विद्यालय की खो खो व कबड्डी की टीमों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंध समिति ने विद्यालय के समस्त स्टाफ को बधाई देते हुए भैया बहनों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

क्षेत्रीय विज्ञान मेला

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित क्षेत्रीय विज्ञान मेला 2025 का आयोजन कृष्ण बाल विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, मंगूपुरा, मुरादाबाद में दिनांक 25, 26 एवं 27 अक्टूबर 2025 को संपन्न हुआ। इस मेले में उत्तराखंड, मेरठ तथा ब्रज प्रांत के शिशु , बाल, किशोर एवं तरुण वर्ग के भैया-बहनों ने विज्ञान संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिसमें मेरठ प्रांत के भैया/ बहनो का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। इसी क्रम में मेरठ प्रांत के अंतर्गत सरस्वती शिशु मंदिर, सी-41, सेक्टर-12, नोएडा के कक्षा पंचम के भैया यशस्वी राय ने विज्ञान प्रदर्शनी में नवाचार (Innovative Model) पर सहभागिता कर क्षेत्रीय विज्ञान मेला 2025 में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय परिवार को गौरवान्वित किया। विज्ञान के क्षेत्र में उत्तम प्रदर्शन के लिए मेरठ प्रांत को ट्रॉफी प्रदान की गई। इस आयोजन में विभिन्न प्रांतों से आए अधिकारी गण , मंत्री महोदय, प्रधानाचार्य गण, आचार्य गण एवं विभिन्न वर्गों के भैया-बहनों की सहभागिता रही, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में दिनांक- 31/10/25 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाई गई। यह दिन हमें एकता, साहस और देशभक्ति का संदेश देता है। सरदार पटेल को “लौह पुरुष” (Iron Man of India) कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और मजबूत इच्छाशक्ति से पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया।

भैया-बहिनों सरदार पटेल जी का जीवन हमें सिखाता है कि यदि हम सच्चे, मेहनती और दृढ़ निश्चयी हों, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं होता।

जन्मोत्सव हवन

विद्या भारती मेरठ प्रान्त
सरस्वती शिशु मंदिर
-41, सैक्टर-12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
जन्मोत्सव पर हवन पूजन

दिनांक- 30/10/2025 दिन को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण से पंचम तक के अक्टूबर माह में जन्मे भैया/बहिनों की दीर्घायु के लिए जन्मोत्सव पर हवन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अग्निहोत्र करते यजमान- और साथ ही अन्य अभिभावक बंधु भी उपस्थित रहे। हवन में बैठने और मंत्र सुनने से भैया-बहिनों को मानसिक शांति मिलती है और भैया-बहिनों में आध्यात्मिकता का विकास होता है।

बताओ तो जानें

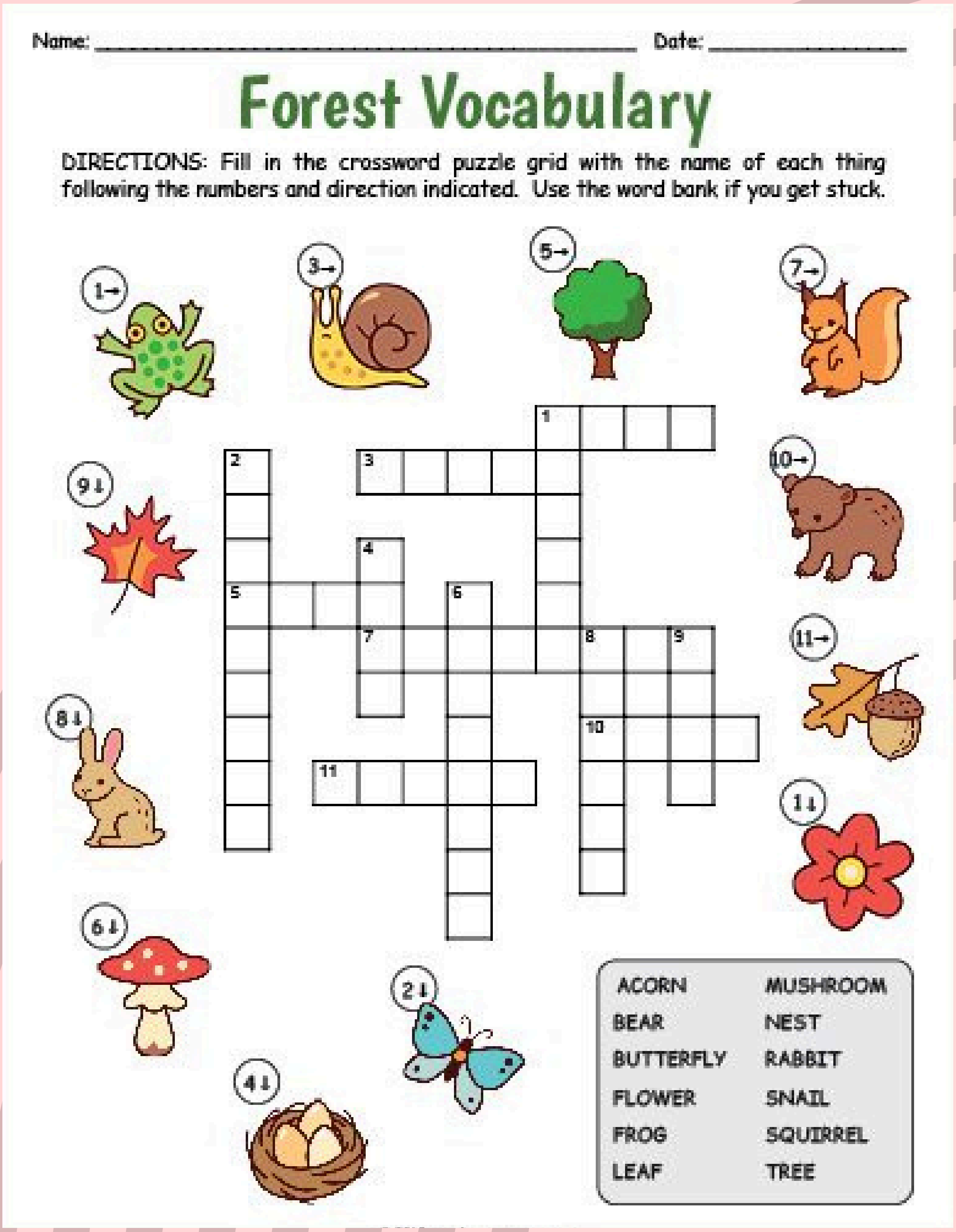

Name: ______________________ Date: ____________

Forest Vocabulary

DIRECTIONS: Fill in the crossword puzzle grid with the name of each thing following the numbers and direction indicated. Use the word bank if you get stuck.

ACORN	MUSHROOM
BEAR	NEST
BUTTERFLY	RABBIT
FLOWER	SNAIL
FROG	SQUIRREL
LEAF	TREE

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

- गुरु नानक जी का जन्म कब हुआ था?
- रानी लक्ष्मीबाई का प्रसिद्ध कथन क्या था ?
- भारतीय सविंधान दिवस कब मनाया जाता है ?
- सर जगदीश चंद्र बॉस ने किसका अविष्कार किया ?
- गुरु तेग बहादुर जी को किस सम्मान से नवाज़ा गया ?
- कार्तिक पूर्णिमा कब मनाया जाता है ?
- विभागीय खेलकूद प्रतियोगिता में विद्यालय के कितने भैया/ बहिनों से सहभागिता की ?
- छेत्रिय विज्ञान मेला किस विद्यालय में सम्पन्न हुआ ?
- सरदार वल्लभ भाई पटेल को ओर किस नाम से जाना जाता है ?
- रानी लक्ष्मीबाई का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।

कक्षा- प्रथम से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 27 व 28 में दिएप्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 10 दिसम्बर 2025 तक भेजने होंगे।